RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2021-23

पिघलता हिमालय

वर्ष 38 अंक 40 हल्द्वानी सम्वत् 2079 सोमवार 13 मार्च 2023 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिय,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

मल्ला जोहार विकास समिति ने उठाई आवाज

भारत-तिब्बत चीन से लगे गाँवों की सुध लो

मिलम, धापा, बोगडियार, नहरदेवी सड़क कार्य धीमा

कार्यालय प्रतिनिधि

हल्द्वानी। मल्ला जोहार विकास समिति ने एक बार फिर से भारत-तिब्बत चीन से लगे गाँवों की ओर सरकार का ध्यान आकृष्ट किया है। समिति ने केन्द्रीय रक्षा राज्य मंत्री अजय भट्ट से भेंट कर उन्हें सीमान्त क्षेत्र की समस्याओं से अवगत कराया और सड़क निर्माण कार्य में धीमी गति के बारे में भी बताया।

मल्ला जोहार विकास समिमि के अध्यक्ष श्रीराम सिंह धर्मशक्तू के नेतृत्व में शिष्टमण्डल ने केन्द्रीय रक्षा राज्य मंत्री श्री भट्ट को पत्र सौंपते हुए बताया कि सीमान्त क्षेत्र भारत-तिब्बत चीन से लगे 14 राजस्व सीमान्त गाँव में जो जनजाति बाहुल्य क्षेत्र है। सन् 1962 के बाद भारत चीन युद्ध के उपरान्त विकास की गति वर्तमान समय पर 75वें वर्ष भारत को स्वतंत्र हुए व्यतीत होने के पश्चात भी अत्यधिक धीमी गति से हो रहा है। यह चिन्तन का विषय है।

शिष्ट मण्डल ने कहा कि वर्तमान समय में केन्द्र सरकार के द्वारा जो सीमान्त क्षेत्र के गाँव के विकास हेतु जनपद चमोली नीति माणा, गुंजी आदि गाँवों को वॉइब्रेन्ट विलेज के अन्तर्गत लिया गया है। उसमें एशिया का सबसे बढ़ा गाँव भारत-तिब्बत चीन सीमा के नजदीक मिलम जो अन्तिम एवं प्रथम गाँव भारत वर्ष का है, उसको सम्मिलित नहीं किया गया है, जो अतिआवश्यकीय है। मिलम गाँव को भी वॉइब्रेन्ट विलेज के अन्तर्गत लिया जाए।

समिति ने यह भी कहा कि सीमान्त क्षेत्र मुनस्यारी की भौगोलिक स्थिति वहाँ निवासरत लोगों की संस्कृति, वेशभूषा, खानपान, बोली-भाषा से सभी अवगत हैं। पर्यटन की दृष्टि से मुनस्यारी क्षेत्र में अनेक बुग्यालों जैसे कि मर्तोली में नन्दा देवी बेस कैम्प, लास्पा ग्लेशियर, पाछू ग्लेशियर, राहलम ग्लेशियर व एशिया का सबसे बड़ा मिलम ग्लेशियर है। जिसे बेरोजगार नवयुवकों को रोजगार से जोड़ने व पर्यटन को बढ़ावा देने में सबसे अच्छी

ढीलम, कुलथम, उगराली व फल्याटी गाँव को जाने वाला मार्ग सुरिड़घाट (दुम्मर)

सुन्दर जगह है परन्तु पैदल सड़क व नदी नालों में पुलों की दयनीय स्थिति होने के कारण आवागमन में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। सम्बन्धित विभाग जिसकी जिम्मेदारी मोटर सड़क निर्माण का कार्य दिया गया है, जैसे 83 बीआरओ, एबीसी राठी कम्पनी को पैदल सड़क की जिम्मेदारी भी मोटर रोड निर्माण कार्य पूर्ण होने तक दोनों विभागों को रख रखाव हेतु लोनिवि से हस्तान्तरित किया जाए। मुनस्यारी क्षेत्र के लोगों ने विभिन्न क्षेत्रों में आजादी से लेकर खेलकूद पर्वतारोहण के क्षेत्र में पद्मश्री हरीश चन्द्र सिंह रावत, पद्मश्री लवराज सिंह धर्मशक्तू जिन्होंने सातवीं बार एवरेस्ट पर्वत पर चढ़ने में सफलता हासिल की। साथ ही स्व. पं. नैन सिंह रावत सीआईई, पं. किशन सिंह रावत रायबहादुर जिन्होंने सर्वे के क्षेत्र में कार्य करते हुए देश का नाम उज्जवल किया। मुनस्यारी में बलाती फार्म के अन्दर पं. नैन सिंह रावत माउंटेनिंग ट्रेनिंग स्कूल की स्थापना की गई है परन्तु प्रदेश सरकार के द्वारा धन स्वीकृति न किये जाने से भवन निर्माण का कार्य अधूरा रह गया है। साथ ही प्रशिक्षण का कार्य भी विगत कई

शेष पृष्ठ 2 पर

मर्तोली की नन्दा माई

पि.हि.प्रतिनिधि

मल्ला जोहार। मर्तोली स्थित माँ नन्दा के मन्दिर का जीर्णोद्धार तेजी से हो रहा है। हिमालयी माता नन्दा देवी ट्रस्ट द्वारा पिछले लम्बे समय से इस अभियान को गति दी गई है। बकायदा तकनीकी विशेषज्ञों की राय के साथ पुराने मन्दिर को संवारने के लिये इन्तजाम किये गये हैं। इस भव्य निर्माण के लिये श्रद्धालुओं से सहयोग की भी अपील की गई है। उम्मीद है कि 2023 तक यह नवनिर्माण कार्य पूर्ण हो जायेगा और चारधाम तर्ज पर यात्रा का प्रस्ताव होते ही देश-विदेश के श्रद्धालुओं का रुख इस ओर होगा।

बेरोजगारों के आन्दोलन पर सिकती रोटियां

पि.हि.प्रतिनिधि

देहरादून/हल्द्वानी। उत्तराखण्ड में बेरोजगार युवाओं के आन्दोलन पर राजनीतिक रोटियां सेकी जा रही हैं। पक्ष हो या विपक्ष अपने अपने मुताबिक बातों को मोड़-तोड़ कर प्रस्तुत कर रहे हैं और परेशान बेरोजगारों की भीड़ में से अपनी ओर संख्या बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है।

उत्तराखण्ड में पेपर लीक, घपले-घोटाले से त्रस्त लोगों में भारी आक्रोश है। अपनी मांगों को लेकर प्रदेशभर के युवा जिस प्रकार देहरादून में प्रदर्शन करने लगे थे किसी ने सोचा भी नहीं था। प्रदर्शनकारियों पर पुलिस लाठीचार्ज की आग पूरे प्रदेश में फैली और विपक्ष प्रदर्शनकारियों की ओर से लड़ने लड़ा। ऐसे में सत्ता पक्ष ने अपने तर्क दिये और कहा आन्दोलन की साजिश की जा रहा है। उत्तराखण्ड बेरोजगार संघ के सदस्यों के साथ अपर मुख्य सचिव राधा रतूड़ी की बातचीज हुई जिसमें सचिव रतूड़ी ने कहा कि अपनी बात शान्तिपूर्वक तरीके से रखें। राज्य सरकार का उद्देश्य है कि बिल्कुल निष्पक्ष एवं पारदर्शी तरीके से भर्ती परीक्षाएं आयोजित हों। इस बीच पेपर लीक प्रकरण में 50 से अधिक संलिप्त अभ्यर्थियों को नोटिस जारी हुआ। गिरफ्तार युवा नेता बॉबी पंवार की छूट के बाद वह आन्दोलन में शामिल हैं।

पूरे होली भर यह मामला गूंजता रहा। सीएम पुष्कर धामी ने अपनी विधानसभा चम्पावत सहित अन्य जगह भी दौरा करते हुए कहा कि पिछले एक साल से पेपल लीक, घपले-घोटाले की बात सामने आ रही थी। ये मामले लम्बे समय से चल रहे थे। हर बार इसकी आवाज उठती थी और फिर दब जाती थी। 60 से अधिक लोग जेल भी गये, फिर भी घोटाले नहीं रुके। इसके लिये सर्जरी जरूरी थी। इसलिये देश का सबसे सख्त नकल विरोधी कानून बनाया गया है।

सरकार और भाजपा के लोग नकल विरोधी कानून को बताते हुए युवाओं को अपनी ओर से समझते रहे। दूसरी ओर कांग्रेस व विपक्षी आन्दोलन को हवा देते रहे। यही कारण था कि चम्पावत में पूर्व विधायक होमेश खर्कवाल को सीएम दौरे के दौरान पुलिस ने पकड़ लिया। उन्हें खुफिया विभाग की सूचना था कि सीएम का विरोध प्रदर्शन हो सकता है।

अब होली निपट चुकी है कि युवाओं के दून आन्दोलन की लपट को फैलाते हुए प्रदेश भर में जुलूस निकाले जा रहे हैं। नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्या ने कहा है कि सरकार नकल विरोधी कानून की बात तो कर रही है लेकिन सड़क पर खड़े युवाओं की कोई सुनवाई नहीं है।

कुल मिलाकर युवाओं को अपने में मिलाने का खेल जारी है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

फ्लू का बढ़ता संक्रमण

कोविड-१९ की महामारी से उबरने के बाद अब कोविड जैसे लक्ष्ज्ञणों वाले इंफ्लुएंजा के मामले तेसी से बढ़ने के कारण लोगों को डर सता रहा है। इस समय देश-प्रदेश में इसका प्रकोप बढ़ रहा है, जो निश्च रूप से से चिन्ता की बात है। पिछले दो महा से लम्बी बीमारी और खांसी के कारण लोगों को श्वांस लेने में परेशानी हो रही है। ऐसा एच ३ एन २ वायरस के कारण हो रहा है। यह वायरस इंफ्लुएंजा ए का एब वैरिएण्ट है।

भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) के अनुसार इस वायरल के प्रकोप से श्वासं संक्रमण के साथ-साथ ज्यादातर लोगों को सिर दर्द और शरीर में दर्द के साथ सदी-जुखाम और तेज बुखार की शिकायतें मिल रही हैं। ज्वर, खांसी, कफ, जी मचलाने, उल्टी, गले में खराबी, नाक बहने, दस्त आदि भी इसके लक्षण हैं। यह वायरस १५ वर्ष से कम उम्र के बच्चों या ६० वर्ष से अधिक उम्र के बुजुर्गों को शीघ्र अपनी गिरफ्त में में लेता है। जिसमें प्रतिरोधक क्षमता कम है वे इसके जल्दी शिकार होते हैं। मधुमेह, दमा या हृदय रोग के शिकार लोगों को भी यह वायरल शीघ्र प्रभावित कर रहा है। यह वायरस जानलेवा नहीं है। इसलिये घबराने की जरूरत नहीं है।

इस वायरस के शिकार लोगों की स्थिति वायु प्रदूषण के कारण और खराब हो जाती है। आईएएम ने सतर्क करते हुए कहा है कि इस वायरस की चपेट में आने वाले लोग एंटी बायोटिक दवाओं का अंधाधुंध उपयोग कदापि न करें। डाक्टरों से लक्ष्णात्मक उपचार करने को कहा गया है। मौसमी ज्वर पांच से सात दिन ही रहता है। खांसी तीन सप्ताह तक रह सकती है। आईसीएमआर ने लोगों को इस वायरस से बचने के लिये एडवाइजरी भी जारी की है। जिसमें प्रायः वहीं सुरक्षात्मक इन्तजाम के लिये कहा गया है जो कोविड महामारी के समय किये गये थे। हाथ को नियमित रूप से साबुन से धाने, फस मास्क पहनने, भीड़भाड़ वाले स्थानीय जलसों से बचने, अपनी नाक और मुंह को छूने से बचाने और खांसी तथा छींकते समय नाक और मुंह को अच्छी तरह से ढकने की जरूरत है। तरल पदार्थो का ज्यादा मात्रा में सेवन किया जाए। इन सबसे अलावा हमें अपने आप से जागरुक रहना है।

मल्ला जोहार......

प्रथम पृष्ठ का शेष

सालों से धनाभाव के कारण नहीं हो पा रहा है। जिसकी जिम्मेदारी रीना कौशल धर्मशक्तू जिन्होंने स्कीइंग के क्षेत्र में विश्व की प्रथम महिला होने का गौरव प्राप्त किया व भारत वर्ष का नाम रोशन किया है।

केन्द्रीय रक्षाराज्य मंत्री को अवगत कराया गया कि विकास की दृष्टि से 83 बीआरओ अस्कोट डिवीजन द्वारा सन् 2008 से मोटर सड़क का निर्माण कार्य मिलम से नीचे की ओर लास्पा, नहर देवी, बोगडियार जिम्मेदारी दी गई है व धापा लीलम रगगाड़ी से बोगडियार तक की जिम्मेदारी एबीसी राठी कम्पनी को दी गई है। मोटर सड़क का निर्माण कार्य जो वर्ष 2012, 2016, 2018, 2021 में पूर्ण करने का लक्ष्य रखा गया था परन्तु यह वर्तमान तक भी दयनीय है। जिस धीमी गति से यह कार्य चल रहा है उसे देख लगता है कि अभी चार वर्ष और लग जाएंगे। इस मामले पर समय-समय पर क्षेत्र की जनता और मल्ला जोहार विकास समिति शासन-प्रशासन को अवगत कराता आ रहे हैं परन्तु निर्माण कार्य में प्रगति नहीं हो रही है।

समिति का कहना है कि वर्तमान समय में चीन सीमा में चीन की तरफ से जो गतिविधियां चल रही हैं उसको देखते हुए सीमान्त की सड़कों को रक्षा के क्षेत्र में सेना, आईटीबीपी, स्थानीय लोगों का आवागमन व पर्यटन को बढ़ावा देने हुए अत्यधिक महत्वपूर्ण है जिसे अतिशीघ्र मोटर सड़क का निर्माण की गति को त्वरित पूर्ण किया जाए।

उत्तराखण्ड जनजाति शोध संस्थान से मिलेगा बजट

खटीमा। सीएम पुष्कर धामी ने कहा कि राज्य सरकार थारु समाज के उत्थान और कल्याण के लिये काम कर रही है। इन्हें हर साल होने वाले थारु महोत्सव के लिये उत्तराखण्ड जनजाति शोध संस्थान से बजट मिलेगा। थारु विकास भवन में उत्तराखण्ड जनजाति एवं अन्तर्राष्ट्रीय थारु सम्मेलन में बोलते हुए सीएम ने कहा कि सरकार का मानना है थारु समाज को मजबूत और आत्मनिर्भर बनाना हमारे देश और प्रदेश की उन्नति के लिये जरूरी है। उन्होंने कहा कि अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व वाली सरकार ने ही थारु समाज को उसका हक दिलाने का कार्य किया था।

थारु सम्मेलन में प्रदेश के अलावा झारखण्ड, बिहार सहित पड़ोसी देश नेपाल से भी लोग उपस्थित थे।

फसक

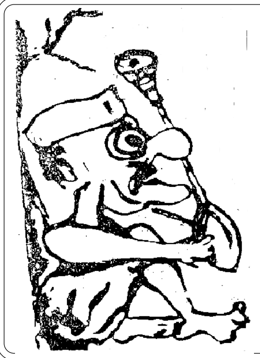

दाज्यू, होली का नशा बाद तक होने वाला ठैरा

ज्योतिष के अनुसार ताबड़तोड़ उलट-पुलट होती रहेगी बल

दाज्यू, कृषि विज्ञान केन्द्र लोहाघाट के विज्ञानियों का कहना है कि फ्रेंचबीन की नई प्रजाति पोलविन तीन गुना अधिक उत्पाद देगी। दाज्यू, कलजुग में कुछ भी हो सकता है। राशन-पानी के कई ब्राण्ड बाजार में हैं। वैसे भी अभी होली की ही खुमारी है, कौन पूछ रहा है क्या खाया? दाज्यू, होली का नशा बाद तक होने वाला ठैरा। ज्योतिष के अनुसार ताबड़तोड़ उलट पुलट होती रहेगी बल। डीडीहाट में तल्ली मिर्थीवासी सिंचाई नहर बनाए जाने की मांग कर रहे हैं। मांग और पूर्ति का हिसाब-किताब हमारी समझ में नहीं आ रहा है। दिल्ली में मार तमाशा मचा हुआ है। सीबीआई ने वर्ष 2021-22 के लिए शराब नीति बनाने और उसे लागू करने के कथित भ्रष्टाचार में डिप्टी सीएम मनीष सिसोदिया को गिरफ्तार किया। इसके बाद कई जगह आम आदमी पार्टी के लोगों ने प्रदर्शन किया है। मंत्री सिसोदिया के साथ ही मंत्री सत्येन्द्र जैन ने अपने पदों से इस्तीफा दिया है। देश-प्रदेश की राजनीति में कहने-सुनने के लिये क्या है और क्या बचा है? दाज्यू, दंगल चल रहा है। सबकी अपनी परिभाषाएं हैं। अपनी आशाएं हैं। अपने राग हैं। अपने विराग हैं। यहाँ तो सर्दी हो या गर्मी बस फड़फड़ाहट है...

रुद्रपुर के धांसू मोहल्ले में कक्षा आठ पास धांसू लौंडा पहुंच गया और वीआईपी बनकर रौब दिखाने लगा। 6 बाउंसर ओर 5 गनर लेकर मोहल्ले में घुसते ही उसने अपने को एनएचएआई और लोनिवि का डीजेएम फाइनेंस बताया बल। दाज्यू, जमाना भी तो ऐसे धांसू लोगों का चल रहा है। मारे जमाने की रंगत उडलती फेसबुक......नंग-धड़ंग नाचते लौंडे-लफारे। वैसे ही संस्कृति के झण्डा बोकने वाले बन गये हैं। मीडिया ने भी मण्डी सजानी ठैरी। संड़ाघ मारती दुनिया में खुशबू ढूंढने के इन्तजाम किये जा रहे हैं। रंग बरसे भीगे चुनर वाली......तेरे ही रंग जावा............अटक मटक लटक झटक. ....मेरा बालम......। पता नहीं कितना धुंआ छोड़ा जाएगा अभी।

हल्द्वानी के विधायक सुमित हृदयेश गैस सिलिंडर के दाम बढ़ने पर गुस्सा दिखाते हुए सड़क पर प्रदर्शन किया। दाज्यू, प्रदर्शन करने का तो हमारा भी बहुत मन करता है लेकिन रोजी-रोटी के जुगाड़ में घिस रहे हैं। देख-देख कर जी मचला रहा है आँखिर दुनियादारी में क्या हो रहा है। जसपुर में 18 करोड़ की जीएसटी चोरी पकड़ी गई बल। छापेमारी के समय व्यापारियों ने विरोध भी किया। दाज्यू, दबादब कार्रवाई हो रही है। रुद्रपुर के एबीडीओ सहित अधिकारी नियमों का उल्लंघन करने के आरोप में निलम्बित कर दिये गये। कब क्या हो जाएगा पता नहीं है। भगत दा कह रहे हैं- 'खटीमा को अपने सीएम का सौभाग्य नहीं मिल सका।' दाज्यू, किसके भाग्य में क्या लिखा है यह हम कैसे कह दें?

अमृत काल में भंगेड़ी-गजेड़ी भी लाइन में हैं। सल्ट में 69 किलो गांजे के साथ दो युवक पकड़ने के बाद पुलिस खुश है। दाज्यू, एकदम छलकत जाए... ....होली की गुजिया, गुलाल, लाल सबकुछ दिमाग में घूम रहा है। अफसरों के जनता दरबार में गजब के मामले जा रहे हैं बल। बड़े साहब के वहाँ दो भाईयों के घर के बंटवारे का मामला चला गया। अब आप ही बताओ, चोर-चौराहा-चबूतरा-चैनल-चौखट......साहब कैसे निपटे? छुनरुवा भी धमकाने लगा है कि पॉवर है देख लूंगा।

बड़े कालेज में घमासान मची हुई है। उनरुवा खड़ताल लेकर घूम रहा है और बता रहा है कि वह हिन्दुस्तान से लेकर अफगानिस्तान तक उसके चेले हैं और खाता-खतौनी में खेत नम्बर सटीक है। दाज्यू, हमें तो बस इतना पता है कि उनरुवा संविदा की नौकरी में जैसे-तैसे टिक गया। उसे नौकरी देने वाले साहब सपने में रोखड़ देख रहे हैं बल। डॉ. लोबिन बता रहा है- 'उनरुवा का रौब तैरता है। भारत-चीन लड़ाई से लेकर भारत-पाकिस्तान युद्ध का वर्णन वह सड़क और चौराहे पर करता है।' हमें यह सुनकर बहुत खुशी हुई लेकिन भूपाल बता रहा था- 'उनरुवा को रोग लग चुका है। वह कभी कहता है कि आईएएस को पढ़ाता था कभी कहता है पीसीएस को पढ़ाता था।' दाज्यू, गुनगुना पानी पीने के बाद पेट का मलबा निकलने ही वाला ठैरा। उनरुवा को खुश हो जाने दो..........। जीने के लिये राहत सामग्री तो चाहिये ही। कामना करें कि लिंगायत सम्प्रदाय का जुड़ाव उन्हें फलदायी हो। वैसे भी दुनिया में कई प्रकार के रोग और रोग दूर करने की दवाईयां हैं। आह्वान अखाड़े के आचार्य महा मण्डलेश्वर को लेकर तक सीबीआई जाँच की मांग की जा रही है।

दाज्यू, जोड़-जन्तर से नौकरी का मजा बहुत ले रहे हैं बल। पापी पेट का सवाल हुआ। जमाने में मजा लूटने और लुटवाने वाले बहुत हैं, हम क्यों कुड़ते रहें। बहुत अच्छा हो रहा है। यह सब भी वायरल बुखार के प्रकार ही हुए। इनकी रोकथाम के चाहे कितने इन्तजाम करो समय-समय पर फैलने वाले हुए। सरकारी नौकरी का झांसा देकर ठगने वाला गिरोह भी पकड़ा गया है। नाइजीरिया तक तार जुड़े थे बल। दाज्यू, कोई कैसे ठग रहा है कोई कैसे। समय की बलिहारी है कोई कहता है चूरन बेचना है, कोई कहता है पीएचडी करवा दूंगा, कोई कहता है फौज में लगवा दूंगा, कोई कहता है भविष्य बना दूंगा, कोई कहता है मैं ये होता तो वह कर देता यह होता तो वो कर देता। दाज्यू, जमाना सूर, कबीर, मीरा के भजन से ज्यादा 'तुस्सी मुस्सी टप्पा चप्पा जांदि सांडि' पता नहीं कैसा-कैसा गा रहा है। होली का नशा भले ही अभी तक है लेकिन हमसे तुस्सी मुस्सी नहीं हो रहा है। दाज्यू, सर्दी जुखाम भी लगा हुआ है। अपना ख्याल रखना। वक्त-वेवक्त हम भी काम के ठैरे।

-भुली झकरुवा

बलाती फार्म में प्रदूषण को लेकर आपत्ति जताई है

मुनस्यारी। चीन सीमा से लगे ग्राम पंचायतों के पंचायत प्रतिनिधियों ने उच्च हिमालय क्षेत्र के बलाती फार्म में भारतीय सेना द्वारा 17 ग्राम पंचायतों के पेयजल आपूर्ति के उदगम स्थलों को प्रदूषित किए जाने पर गम्भीर आपत्ति जताई। कहा कि प्रशासन यहाँ से सेना को दूसरे क्षेत्र में शिफ्ट करे अन्यथा जनता सेना के खिलाफ आन्दोलन करेगी, जो सीमा क्षेत्र के अच्छा संकेत नहीं है।

कहा कि कोविड काल का लाभ उठाते हुए प्रशासन ने भारतीय सेना को उद्यान विभाग की उपजाऊ भूमि गुपचुप तरीके से आवंटित कर दिया। इस पर तत्कालीन उपजिलाधिकारी ने 2019 में पंचायत प्रतिनिधियों की आपत्ति के बाद रोक लगा दी थी। कोविड का संक्रमण बढ़ते ही सेना ने इस क्षेत्र में अनाप शनाप निर्माण कर दिया है। क्षेत्र के 17 ग्राम पंचायतों की 20 हजार की आबादी इस क्षेत्र से निकलने वाले पानी को पीकर प्यास बुझती है। सेना ने शौचालय के पिट पेयजल के उदगम स्थलों के निकट बनाकर पानी को प्रदूषित दिया है। इस क्षेत्र को स्थानीय लोगों ने प्रदूषण मुक्त रखा हुआ था, आज भारतीय सेना ने इस क्षेत्र को कूड़ा करकट का क्षेत्र बना दिया है।

स्वच्छ पानी एवं हवा के रूप में पहचान रखने वाले हिमनगरी को इस तरह से बर्बाद किया जा रहा है। पीनें का पानी गन्दा होने से इस क्षेत्र में बिमारियों के फैलने की भी शंका पैदा हो रही है। जिला पंचायत सदस्य जगत मर्तोलिया ने पिथौरागढ़ जाकर जिलाधिकारी से मुलाकात कर यथा स्थिति की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि तीन साल से हम भारतीय सेना को यहाँ से शिफ्ट करने की मांग करते थक गए है। उन्होंने कहा कि अब इस मुद्दे पर निर्णायक आन्दोलन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि हम नहीं चाहते हैं कि भारतीय सेना के खिलाफ जनता आन्दोलन करें। इसलिए प्रशासन तथा सरकार को हस्तक्षेप कर मामला सुलझाना चाहिए।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

लघु कथा — कन्या पूजन

प्रोफेसर दीपा गोबाड़ी

बेतरतीब बिखरे बाल, मैली कुचली फ्राक, सांवला रंग, दुबली पतली आठ नौ साल की रही होगी गुनिया। उसका काम था अपने दो छोटे भाई बहिनों की देखभाल करना। उसकी अम्मा आसपास दो चार घरों में बर्तन भांडे मलने का काम करती थी। पिता मजदूरी करते थे। इधर बीमार रहने लगे हैं। हर समय खांसते रहते। कभी कभी बुखार भी रहने लगा है। इसलिए आजकल मजदूरी के लिए भी नहीं जा पा रहे हैं।

गुनिया लोगों का अपना मकान नहीं था। एक खाली पड़े प्लाट के कोने में चार बांस के खम्भे में छप्पर डालकर थोड़े बहुत जरूरत के सामान के साथ ही वे सभी रहते थे और गुजर-बसर करते थे। ऐ गुनिय! जा चावल ले आ ...भाई को शौच कराती गुनिया के कान में माँ की आवाज पड़ी। पैसे लेकर गुनिया पंसारी की दुकान की तरफ बढ़ी। प्लाट के सामने सड़क के दूसरी तरफ हलवाई का बड़ा मकान था। मकान के निचले हिस्से में मिठाई की दुकान थी। उसका परिवार गुनिया के परिवार को बड़ी हिकारत भरी नजरों से देखता था ।बोलना तो दूर की बात थी। जब भी गुनिया सड़क से गुजरती, शीशे के भीतर रखी रंग बिरंगी मिठाई देख कर उसके मुंह में पानी आ जाता। आज भी उस दुकान के सामने पहुँचते ही ठिठक गई और मिठाइयों को लालसा भरी नजरों से देखने लगी। ऐ छोकरी चल भाग, कड़क आवाज सुनकर वह लार घुटकते हुए आगे बढ़ी और पंसारी की दुकान से चावल ले आई। आज भी चावलों के साथ नमक मिर्च मिला कर खाना पड़ेगा। बहुत दिन हो गये, अच्छा खाना भी नसीब नहीं हुआ, सोचते घर पहुँच गई। घर आकर भी गुनिया ने झोपड़ी को अच्छी तरह झाड़ू से बुहारा, पानी भरा, चूल्हे में आग जलाई। तब जाकर उसकी अम्मा ने पतीली में चावल धो भिगोकर हल्दी नमक मिर्च मिला दिया। थोड़ी देर में उस चावलों की खिचड़ी खा कर सब सो गए। गुनिया को भी कब नींद आई पता नहीं चला। सुबह अम्मा की आवाज से नींद टूटी ।उठ गुन्नी नहा धो ले। आज नवरात्रि की अष्टमी है, देवी मैया की पूजा होती है। थोड़ी देर में आसपास के मकानों से शंख घण्टी की आवाज भी आने लगी।

गुनि आज काम अधिक होगा। मुझ को आने में देर हो जाएगी। तू छोटे भाई बहिन और अपने पापा का ख्याल रखना कह कर अम्मा अपने काम में चली गई। थोड़ी देर में सामने मकान में रहने वाली हलवाइन जोर से बोली- बेटी! थोड़ी देर हमारे घर आ जाना। कन्या पूजन है। गुनिया चुपचाप रही। उसके पापा हाथ जोड़कर बोले- हाँ मालकिन आ जायेगी, आ जायेग ..अभी भेजूंगा। गुनिया ने फटाफट नहाया। अम्मा राधा आण्टी के वहाँ से कुछ दिन पहले पुरानी फ्राक लाई थी, उसको पहन कर, बालों को अच्छी तरह संवार कर, पावों में हवाई चप्पल पहन सामने मकान में पहुँच गई। घर महल जैसा था। उसको भी दूसरे बच्चों के साथ बिठाया गया। सब के साथ उसके भी पाँव धोकर पोछें, रोली लगाया, भेंट दक्षिणा दी। और सामने ढेर सारे पकवान रखे। रंग बिरंगी मिठाई भी उसमें थी। गुनिया ने झटपट सब खा लिया। इतना ही नहीं, स्टील के एक बड़े कटोरे में घी टपकने वाला हलुवा और चने का प्रसाद दिया। एक बड़ी लाल चुनरी उसको ओढाई गई। गुनिया को ऐसा लग रहा था, मानो वह कोई सपना देख रही है। घर पहुँचने तक अम्मा भी आ आ गई थी। वह भी हलवा पूरी लाई थी। गुनिया बोली- अम्मा यह नवरात्रि रोज-रोज क्यों नहीं आती है, उसकी अम्मा सामान उलटते पुलटते बोली- मेरी बिट्टो! नवरात्रि तो साल में दो बार आती है। लेकिन लड़कियों को घर में नहीं आने दिया जाता। एक एक सन्तान वाले घर में सभी लड़के पैदा करते हैं। इसलिए उस घर के दरवाजे आज तेरे लिए खुले। क्या कहा जा सकता है। लड़कियों को देवी रूप में पूजते हैं, पर कितनी देवियों को वे कोख में ही मार देते हैं ....।

गुनिया की समझ में पता नहीं अम्मा की बात आई या नहीं। वह तो अपने भाई बहिनों को हलवा खिलाने में व्यस्त थी।

ज्योतिष की बातें - 116

15 मार्च 2023 को सूर्य मित्रराशि मीन में प्रवेश करेगा। वहाँ पर मित्रग्रह गुरु पहले से ही विद्यमान है अतः सूर्य में कुछ सौम्यता भी रहेगी। अतः अगले एक माह सूर्य स्वास्थ्य, पराक्रम, सफलता, आत्मबल आदि अपने कारक विषयों में मकर, तुला, मिथुन व वृषभ राशि के जातकों को अत्यन्त शुभ फल प्रदान करेगा। अन्य राशियों के लिए सामान्य फल समझना चाहिए ।

15 मार्च 2023 को बुध अपनी नीचराशि मीन में प्रवेश करेगा। वहाँ पर गुरु और सूर्य भी विद्यमान होंगे। इस समय बुध अस्त भी चल रहा है अतः बुध अत्यन्त निर्बल रहेगा। इसलिए अगले 15 दिन बुध व्यापार, वाणिज्य, बुधि आदि अपने कारक विषयों में शुभफल प्रदान करने में असमर्थ रहेगा।

शीतलाष्टमी- चैत्र कृष्णपक्ष की नवमीयुता अष्टमी तिथि को शीतलाष्टमी का पर्व मनाया जाता है। इस दिन त्वचा रोग, चेचक, गेड़ा-ड्डंसी आदि के निवारणार्थ शीतलाष्टकम् का पाठ कर शीतला माता की पूजा अर्चना करनी चाहिए।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद

सम्यक विचार- 8

शब्द हत्या

एक शब्द है 'हरिजन' जोकि पहले भगवान 'विष्णु के भक्त' के रूप में प्रयोग होता था अब यह शब्द एक जातिविशेष के लिए प्रयुक्त होता है। आज यदि कोई व्यक्ति प्राचीन ग्रन्थों में हरिजन शब्द पढ़ेगा तो सोचेगा कि पहेली भी अस्पृश्य अर्थात तथाकथित अछूत लोग होते थे। इस प्रकार हरिजन शब्द का वास्तविक अर्थ लुप्त हो गया है अर्थात् 'हरिजन' शब्द की हत्या हो चुकी है।

दूसरा शब्द है 'किन्नर'। पहले यह एक देवयोनि के सन्दर्भ में प्रयुक्त होता था, अब नपुंसक अर्थात् हिजड़े के लिए प्रयुक्त होता है। 'यदि होता किन्नर नरेश मैं, राज महल में रहता' इस कविता को आज कोई बालक पढ़ेगा तो क्या सोचेगा? कि पहले के लोग नपुंसक बनने की इच्छा रखते थे? 'नपुंसक' शब्द में ऐसी कौन सी कमी थी कि उसकी जगह 'किन्नर' बोलना पड़ा? इस प्रकार किन्नर शब्द की भी हत्या कर दी गई।

अगला शब्द दिव्यांग। दिव्यांग का अर्थ होता है जिसका शरीर दिव्य तत्वों से बना हो अर्थात् पंचतत्वों से नहीं अर्थात् देवलोक में रहने वालों को दिव्यांग कहा जाता था। अब उस व्यक्ति को दिव्यांग कहते हैं जिसके अंगों में, हाथ पैरों में, आँखों में, कानों में कोई कमी हो, शरीर में कोई कष्ट हो, कोई अंग विकल हो अर्थात विकलांग हो, उसको दिव्यांग कहते हैं। विकलांग शब्द में ऐसी कौन सी कमी थी? इस प्रकार दिव्यांग शब्द की भी हत्या कर दी गई।

इसी प्रकार 'भगवान', 'योग' आदि बहुत से सुन्दर-सुन्दर शब्दों के मूल भावों को नष्ट कर नेताओं ने अपने अहंकार में उन शब्दों की हत्या कर दी। ये साहित्यिक अपराध बन्द होना चाहिए।

-सरल

लघु कहानी — पासा

दीवान सिंह कठायत

अनेक दलों को बदलते हुए, आश्वासनों के अम्बार एवं अपने द्वारा जनता को लुभाने हेतु किये गए तमाम बेतुके प्रयासों के बाद भी, असफल व खिन्न से नेताजी को अपना राजनैतिक अस्तित्व बचाने तथा आगामी चुनावों में सफलता हासिल करने के लिए अब कौन सा तुरुप का इक्का चला जाए? बेचैन किए हुए था कि तभी उनके शातिर दिमाग को एक फायदेमंद युक्ति नजरों के सामने दिखाई दी। उन्होंने सोचा, यदि यह चाल काम कर गयी तो उन्हें सम्भवतः अधिक से अधिक वोट प्राप्त होकर, कुर्सी तक पहुँचने से कोई रोक नहीं सकेगा।

आनन-फानन में उन्होंने प्रेस कांफ्रेंस बुलाई और एक धार्मिक ग्रन्थ को विवादित बताकर उसे बहुसंख्यक लोगों के सम्मान से जोड़ते हुए उसका विरोध करने की घोषणा की और स्वयं को उस समाज का परमहितैषी व्यक्ति बता, विरोधी पार्टी को उस पुस्तक से जोड़ दिया। तमाम समाचार चौनलों को मनमाफिक चटपटी व टीआरपी बढ़ाने वाली खबर मिल चुकी थी। उन्होंने इस पर और अधिक नमक मिर्ची लगाते हुए इसे राष्ट्रीय से अन्तर्राष्ट्रीय हेड लाईन बनाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। समाज में इससे उथल-पुथल सी मच गई थी.सारे चौनल इसके पक्ष व विपक्ष में हो रही गरमा-गरम प्रतिक्रियाओं का लगातार लाइव प्रसारण करने लगे।

कई दिनों तक मचे हो हल्ले के बाद, जनता नेताओं का अब असल मंतव्य समझ चुकी थी और नेताओं के द्वारा फैंका गया पासा उसके गले की हड्डी बन, अब उनके लिए परेशानी का सबब बन गया। (प्र.अ., मु पो. राईआगर)

जिंदगी क संदूक में टांजो

मणि मै बाबों क करम धरम
मणि औलादों क करनी करतूत
मिलि उनर जीवन बणै
नक भल नरग सरग
सब यैं छू
मरि बेर जाणि के हुंछ
कैल द्यख कैल सुणि
बस यो ई जिंदगी कि सुज जणै
तबै हमार पुरखों ल कै रौ
औलाद कि लिजी
धन नै धरम सांजण चौंछ
तबै औलाद भल बाट हिटैं
भल काम करि निक नौं कमैंछ
भल क भल नक क नक
सब यैं देखिंछ
योई सब करमों लै
जिंदगी क कुनव लेखिंछ
यै क लिजी भल करो भलै ह्वल
नक करला नकै ह्वल
दुनी देखलि दुनी बांचलि
वी यां एक एक मनखी लिजी नजीर बणलि
लकीर बणलि
तो आओ औलाद कि लिजी
धारम सांजो
भाल भाल करमों कैं
जिंदगी क संदूक में टांजो

-रतनसिंह किरमोलिया
अणां-गरुड़ (बागेश्वर)

पूर्णागिरी मेले में उमड़ने लगे हैं श्रद्धालु

मेले के लिये सेक्टर मजिस्ट्रेट तैनात, अतिरिक्त निगरानी

टनकपुर। उत्तर भारत का सुप्रसिद्ध पूर्णागिरी मेले में श्रद्धालु उमड़ने लगे हैं। कोरोना काल के समय दो साल तक मेले के रुकने से व्यापारियों व यात्रियों में निराशा थी। इस बार मेले की शुरुआत भली हो गई है और कामना है कि पूरा मेला शान्तिपूर्वक सम्पन्न हो।

पूर्णागिरी मेले के कारण बनबसा, टनकपुर से लेकर पूर्णागिरी तक बाहर से आने वाले यात्रियों की चहल-पहल रहती है और सीमा पार नेपाल में भी यह श्रद्धालु सिद्धबाबा के दर्शन के लिये जाते हैं। मान्यता है कि पूर्णागिरी माता के दर्शन के बाद सिद्धबाबा के दर्शन करने चाहिये। ऐसे में ब्रह्मदेव, महेन्द्रनगर तक भी खूब चहल पहल होने लगी है।

नौ मार्च को उद्घाटन की औपचारिकता हुई लेकिन यात्री पहले से आने लगे थे। पूर्णागिरी धाम की अत्यधिक मान्यता होने के कारण बड़ी संख्या में यूपी के पैदल जत्थे कई दिनों की यात्रा करते हुए यहाँ पहुँचते हैं। सुविधा होने के कारण अब निजी वाहनों की भीड़ भी काफी आने लगी है। इसके अलावा रेल यात्रा में बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुँच रहे हैं।

मेले में श्रद्धालुओं को को बेहतर सुविधाएं मुहैया कराने के लिये प्रशासन ने अपनी ओर से तैयारी कर रखी है। मेला मजिस्ट्रेट एसडीएम और मन्दिर समिति की बैठक में पहले ही तय किया जा चुका है कि तालमेल बनाते हुए मेले को सम्पन्न किया जायेगा। मेले के लिये 6 सेक्टर मजिस्ट्रेटों कीकी तैनाती की गई है। मेला मजिस्ट्रेट एसडीएम सुन्दर सिंह ने बताया कि व्यवस्थाओं पर निगरानी के लिये मेला क्षेत्र में यह तैनाती है। ठुलीगाड़ से भैरव मन्दिर सेक्टर में तहसीलदार रिंकी आर्या को तैनात किया गया है। बनबसा मेला क्षेत्र में नगर पंचायत ईओ राकेश कोटिया को मजिस्ट्रेट बनाया गया है।

सारथी

हे मेरे सारथी
तरकश है तीरों से सजा हुआ
हर ओर है योद्धा डटा हुआ
रणभेरी है बज रही
पर विपदा अब भी है वही
जहाँ तक दृष्टि जाती है
केवल अपनो को ही पाती है
सभी तो मेरे पूज्यनीय हैं
और कौरव भी तो अपने हैं
एक ही वंश के जन्मे हैं
भिन्न है फिर भी अपने हैं
किस पर तीर चलाऊँ मैं
किसे छोड़ू या मार गिराऊँ मैं
रक्तरंजित रणभूमि का वीभत्स दृश्य
मेरे मन को कुम्हलाता है
यह सोच कलेजा मुँह को आता है
निर्दोषो का जो लहू बहाऊँगा
पाप का भागी मैं बन जाऊँगा ।
हे मेरे सारथी
बड़ी विषम है परिस्थिति
मुझे संज्ञान का मार्ग दिखाओ
अपने स्वरूप का साक्षात्कार कराओ
हे मेरे सारथी
आप ही हैं मेरे परमार्थी ।।

-रेनू कपूर
गाजियाबाद

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

आदि कैलास यात्रा मई प्रथम सप्ताह से होगी

यात्रियों को बेहतर सुविधा के लिये निगम ने तैयारी की, वाईफाई सुविधा भी इस बार से

नैनीताल। आदि कैलास यात्रा 4 मई से आरम्भ हो जायेगी। कोरोना की मार झेलते हुए दो साल बाद इस बार यह यात्रा आरम्भ की जा रही है। इसके लिये कुमाऊँ मण्डल विकास निगम ने विशेष सुविधाएं देने की बात भी कही है।

मई-जून में होने वाली इस यात्रा के लिये बीस दलों में 800 यात्रियों को अवसर मिलेगा।

जुलाई से नवम्बर के बीच दलों का निर्धारण बाद में किया जायेगा। कोविड कारणों से कैलास मानसरोवर यात्रा और आदि कैलास यात्रा नहीं हो पाई थी। इस बार निगम ने इसकी तैयारी की है।

निगम के महाप्रबन्धक ए.पी. बाजपेयी ने बताया है कि प्रत्येक दल में 40 यात्री होंगे। निगम वर्ष 1991 से इस यात्रा का संचालन कर रहा है। यात्रा काठगोदाम से वापस काठगोदाम तक आठ दिन और धारचूला से शुरु होकर वापस धारचूला तक 5 दिन की अवधि की होगी। यात्रा की दर काठगोदाम से 45000 रुपये प्रति व्यक्ति यात्री और धारचूला से 35000 प्रति व्यक्ति होगी।

कुमाऊँ मण्डल विकास निगम के महाप्रबन्धक ए.पी.बाजपेयी ने बताया है कि यात्रा के लिये निगम के सभी केन्द्रों के माध्यम से या ऑनलाइन बुकिंग की जा सकती है। यात्रा काठगोदाम से बस और टैपों ट्रैक्टर व धारचूला से बोलोरो से कराई जायेगी। इस बार निगम ने अपने पर्यटक आवास गृहों का रिनोवेशन किया है ताकि यात्रियों को बेहतर सुविधाएं मिल सकें। गुंजी में वाईफाई की सुविधा भी दी जायेगी। यात्रा में काठगोदाम से भीमताल, कैंची, अल्मोड़ा, चितई, जागेश्वर, पिथौरागढ़, जौलजीवी, नपलच्यु, कालापानी, नाभीढांग, ओम पर्वत, गुंजी, नाबी, कुटी, ज्योलिकांग आदि कैलास एवं पार्वती सरोवर दर्शन का मौका मिलेगा।

रामनगर के मोहान तक होगा जी-२० के तहत सौंदर्य

डीएम ने निरीक्षण किया और अव्यवस्था पर नाराजगी, अतिक्रमण हटाने के निर्देश

रामनगर। रामनगर में जी-20 के तहत मोहान तक सौन्दर्यीकरण होगा। इससे रामनगर में काफी बदलाव होगा। इस बीच जिलाधिकारी धीराज गर्ब्याल ने निरीक्षण भी किया और अव्यवस्थाओं पर नाराजी जताने के साथ ही अतिक्रमण हटाने के निर्देश दिये।

जी-20 समिट में चीफ साईस टेबल राउण्ड कार्फ्रेंस की तैयारियों को लेकर डीएम धीराज सिंह गर्ब्याल ने नयागाँव से ढिकुली तक निरीक्षण कर अधिकारियों को निर्देश दिये। विदेशी मेहमानों के निर्धारित रूट नयागाँव से रामनगर तक लोनिवि, वन, राजस्व व अन्य विभागीय अधिकारियों की ओर से सार्वजनिक सम्पत्तियों पर रंग-रोगन, मरम्मत कार्य शुरु कर दिया है।

जिलाधिकारी ने एसडीएम रामनगर और कालाढूंगी को क्षेत्र में पुलिस के साथ अवैध अतिक्रमणक बेतरतीब लगे साइनेज हटाने के निर्देश दिये। सिंचाई विभाग की ओर से बैराज की रेलिंग में हरा और सफेद रंग लगाने का कार्य इन दिनों चल रहा है। शिक्षा विभाग की ओर से राजकीय प्राथमिक विद्यालय नया गाँव, कमोला और ढिकुली में भी रंग रोगन, मरम्मत आदि कार्य जारी है। विद्यालयों के सुदृढ़ीकरण के लिये रामनगर के होटल स्वामियों की ओर से भी सीएसआर फण्ड में धनराशि देनपे पर सहमति दी गई है। वन विभाग के पवलगढ़ चेक पोस्ट में हुर्ठ कैमोफ्लेज रोगन की तरह ही अन्य सभी वन परिसम्पत्तियों में भी कार्य होगा। पवलगढ़ में कर विभाग की ओर से सेन्टर में कैमोफ्लेज रंग रोगन का कार्य चल रहा है, जो आकर्षण व वन क्षेत्र होने से रूबरू कराता है। डीएम ने नगर पालिका क्षेत्र रामनगर में अव्यवस्था पर भी नाराजी करते हुए ईओ पालिका को निरीक्षण कर अतिक्रमण हटाने के निर्देश दिये हैं।

चुनाव तैयारी : भगतदा का दौरा, दूसरी ओर सीएम धामी पूरी तरह जनता के बीच

परिक्रमा

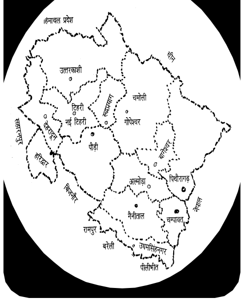

चम्पावत। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी का विधानसभा क्षेत्र जब से चम्पावत बना है, यहाँ की राजनीति में नये ताने बुने जाने लगे हैं। सीएम धामी ने लगातार दौरे करते हुए पूरी तरह जनता के बीच ठहरावा शुरु कर दिया है। साथ ही उनकी अपनी टीम लगातार बनबसा से लेकर चम्पावत तक पैनी नजर रखे हुए है।

सीधी सी बात है कि युवा मुख्यमंत्री को अपने राजनीतिक भविष्य के लिये बुनियाद मजबूत करनी है और इसके लिये वह हर प्रकार से परख कर रहे हैं। तमाम आयोजनों में उनकी उपस्थिति और उनकी रैली, बैठक, सम्पर्क इस बात की ओर इशारा कर रहे हैं कि वह किसी भी तरह के चुनाव में कमजोरी नहीं दिखाना चाहते हैं। इसके लिये संगठन स्तर से लेकर सारे रास्ते खोल दिये गये हैं। ऐसा नहीं है कि चम्पावत में धामी के आने से हर कोई सन्तुष्ट है लेकिन पद में होने के कारण खुल कर विरोध तो नहीं होगा। ऐसे में बड़ी परीक्षा निकाय चुनाव में टिकट बंटवारे पर होने वाली है। आंखिर सीएम का संकेत किन किन प्रत्याशियों को अवसर देगा। अवसर देने के अलावा उन्हें जीत दिलवाना भी अग्नि परीक्षा सी होने वाली है।

दूसरी ओर श्री धामी की राजनीति के गुरु कद्दावर नेता भगत सिंह कोश्यारी ने जिस प्रकार से चम्पावत जिले का भ्रमण करते हुए लोगों से सम्पर्क साधा है वह भी उनके लिये आशीर्वाद है। भगत दा स्पष्ट कर चुके हैं कि वह स्वयं राजनीति में उतरने की बजाय अब जनसेवा करना चाहते हैं।

राजनीति में हर अगले पल कुछ भी हो सकता है फिलहाल सीएम की दौड़ और भगत दा का सम्पर्क आने वाले चुनाव तैयारी के लिये कार्यकर्ताओं को सतर्क कर रहा है।

नैनीताल जिले में अतिक्रमणों पर कार्रवाई

विकास प्राधिकरण, राजस्व विभाग व नगरनिगम ने व्यायामशाल की भूमि की पैमाइश की

हल्द्वानी। होली निपटते ही जिलाप्रशासन ने जनपद में अतिक्रमण के खिलाफ कार्रवाई शुरु कर दी है, जिससे अतिक्रमण कारियों में हड़कम्प है। डीएम ने सभी विभागों को अतिक्रमण चिह्नित करने के लिये कहा है।

जिलाधिकारी धीराज गर्ब्याल के निर्देश के बाद जिले भर में तमाम विभाग अपनी उस भूमि को चिह्नित कर रहे हैं जिस पर अतिक्रमण हुआ है। डीएम ने कहा है कि अतिक्रमणकारी कोई भी हो उसे छूट नहीं मिलेगी। उन्होंने कहा कि हल्द्वानी शहर में अतिक्रमण विरोधी अभियान चलाने के साथ ही यातायात में बाधा उत्पन्न करने वाले स्थानों को भी ठीक करना है। डीएम ने सख्त निर्देश दिये हैं कि पन्द्रह दिन के भीतर सारे अतिक्रमणों की रिपोर्ट दी जाए।

शिविर कार्यालय में जिलाधिकारी ने अधिकारियों को जिलेभर में अतिक्रमण चिह्नित करने के निर्देश दिये। नगर निगम, सिंचाई विभाग, लोनिवि सहित अन्य विभागों को उनकी भूमि पर हुए अतिक्रमण के खिलाफ अभियान को कहा गया है। इस बीच विकास प्राधिकरण, राजस्व विभाग व नगर निगम की टीम ने मटर गली व्यायामशाला की जमीन की पैमाइश की। अतिक्रमण को ध्वस्त करने के बाद प्रशासन को इस जमीन की पैमाइश के लिये निर्देश थे। सिटी मजिस्ट्रेट ऋचा सिंह ने बताया कि भूमि की पैमाइश पूरी होने के बाद जमीन को नगर निगम को हस्तान्तरित किया जाएगा।

शहर के गैस गोदाम रोड आनन्दपुर निवासी गीता बिष्ट की शिकायत पर डीएम ने आदेश दिया है कि पीड़िता के कब्जाए प्लाट मामले में जाँच की जाए। पीड़िता ने आरोप लगाया है कि एक व्यक्ति ने उनकी भूमि पर कब्जा कर व्यावसायिक कार्य शुरु कर दिया है।

काठगोदाम-पंचेश्वर मार्ग को एनएच का दर्जा मिले

सीएम ने केन्द्रीय मंत्री गडकरी से की भेंट। उम्मीद है श्यामपुर फ्लाईओवर बनेगा

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने केन्द्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी से भेंट करते हुए कहा कि सामरिक महत्व एवं पर्यटकों के आवागमन के लिए काठगोदाम-भीमताल धानाचूली-मोरनोला-खेतीखान-लोहाघाट पंचेश्वर मोटर मार्ग को राष्ट्रीय राजमार्ग के रूप में अधिसूचित करने और मसूरी टनल का कार्य उत्तराखण्ड लोक निर्माण विभाग को देने का निवेदन किया। केन्द्रीय मंत्री गडकरी ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा भेजे गए सड़क निर्माण से सम्बन्धित प्रस्तावों को यथाशीघ्र मंजूरी दी जाएगी।

मुख्यमंत्री धामी ने टिहरी जिले के व्यासी स्थित एक होटल में केन्द्रीय मंत्री गडकरी से भेंट की, वह निजी यात्रा पर आए हुए थे। इस भेंट के दौरान सीएम ने उनके समक्ष राज्य व राष्ट्रीय मार्गों के निर्माण के सम्बन्ध में चर्चा की। उन्होंने केन्द्रीय मंत्री को बताया कि केन्द्रीय सड़क परिवहन एवं राज्यमार्ग मंत्रालय ने 6 राज्य राजमार्गों को राष्ट्रीय राजमार्ग के रूप में घोषित करने की सैद्धान्तिक सहमति दी गई थी। इनमें खैरना-रानीखेत, बुआखाल-देवप्रयाग, देवप्रयाग-गजा-खड़ी बिहारीगढ़-रोशनाबाद व लक्ष्मण झूला-दुगड्डा-मोहान-रानीखेत मार्ग शामिल हैं। सीएम ने इन मार्गों को जल्द अधिसूचित करने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार द्वारा मसूरी की महत्वपूर्ण दो हजार करोड़ की लागत से बनने वाली टू लेन टनल योजना में एनएचआई को कार्यदायी संस्था बनाया गया है। इस योजना के प्रथम चरण के सभी कार्य लोनिवि द्वारा किए जा रहे हैं। ऐसे में मसूरी टनल का कार्य भी लोनिवि को आवंटित किया जाए।

पूर्व केन्द्रीय शिक्षा मंत्री व हरिद्वार के सांसद रमेश पोखरियाल निशंक ने भी श्री गडकरी से भेंट की और श्यामपुर ऋषिकेश में फ्लाईओवर निर्माण का मुद्दा उठाया। गुमानीवाला के मनसा देवी क्षेत्र में फ्लाई ओवर का अनुरोध किया। गडकरी ने उन्हें इसके लिये भरोसा दिलाया है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

प्रसिद्ध नाग मन्दिरों का केन्द्र बेरीनाग

डॉ.हरीश चन्द्र अन्डोला

बेरीनाग, जिसे बेड़ीनाग या बेणीनाग भी कहा जाता है, यह मध्य हिमालय क्षेत्र उत्तराखण्ड राज्य एक मुख्य नगर तथा तहसील है। यहा स्थानीय भाषा में इसे बेड़नाग भी कहा जाता है। नगर के समीप पहाड़ी ऊपर एक भव्य प्राचीन बेणीनाग देवता का का ऐतिहासिक मन्दिर है, जो कुमाऊँ के प्रसिद्ध 7 नाग मन्दिरों में एक है। कुमाऊँ मंडल में इस मन्दिर की लोकप्रियता और प्रसिद्धी के कारण इस क्षेत्र को बेणीनाग कहा जाने लगा। समय बीतने के साथ-साथ यह नाम पहले बेणीनाग से बेड़ीनाग हुआ और फिर ब्रिटिश काल मे अंग्रेजों ने बेड़ीनाग से बदलकर बेरीनाग नाम रख दिया। क्योकि अंग्रेजो को बेड़ीनाग बोलने में परेशानी होती थी। बेरीनाग की भैगोलिक स्थिति समुद्र तल से इसकी औसत ऊँचाई 1,860 मीटर 6,100 फीट है। यह राष्ट्रीय राजधनी नई दिल्ली के 460 किमी उत्तरपूर्व और राज्य की राजधानी देहरादून के 380 किमी पूर्व में स्थित है। बेरीनाग कुमाऊँ मण्डल के अन्तर्गत आता है और यह कुमाऊँ के मुख्यालय नैनीताल के 160 किमी उत्तर.पूर्व में स्थित है।

बेरीनाग हिमालय पर्वतमाला की कुमाउंनी पहाड़ियों में बसा है। नगर के आस पास फैले जंगलों में चीड़, बांज, देवदार और साल के पेड़ बहुतायत में पाए जाते हैं। यहाँ के अधिकतर पहाड़ चूना पत्थर, बलुआ पत्थर, स्लेट, गनीस और ग्रेनाइट इत्यादि के बने हैं। बेरीनाग की जलवायु कुमाऊँ के अन्य पर्वतीय क्षेत्रों की तरह ही उप-ऊष्णकटिबन्धीय है। गर्मियों जून में औसत दैनिक तापमान 21.4 डिग्री सेल्सियस के आसपास होता है, जबकि सर्दियों जनवरी में यह लगभग 7.9 डिग्री सेल्सियस तक गिर जाता है। वर्ष भर में औसत तापमान 13.5 डिग्री सेल्सियस तक की भिन्नता प्रदर्शित करता है। सबसे शुष्क और सबसे नम महीनों के बीच वर्षा का अन्तर 424 मिमी रहता है। सबसे कम वर्षा नवम्बर में होती है। यहा सबसे ज्यादा वर्षा जुलाई में होती है।

बेरीनाग ऐतिहासिक तौर पर गंगोली क्षेत्र के अन्तर्गत माना जाता है। यहाँ तेरहवीं शताब्दी से पहले कत्यूरी राजवंश का शासन था। तेरहवीं शताब्दी के बाद यहाँ मणकोटी राजाओं का शासन स्थापित हो गया। जिनकी राजधानी मणकोट में थी। सोलहवीं शताब्दी में कुमाऊँ के राजा बालो कल्याण चन्द ने मणकोट पर आक्रमण कर गंगोली क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। इसके बाद यह क्षेत्र 1790 तक कुमाऊँ का हिस्सा रहा। 1790 में गोरखाओं ने कुमाऊँ पर आक्रमण कर कब्जा कर लिया और फिर 1815 के गोरखा युद्ध में गोरखाओं की पराजय के बाद यहाँ अंग्रेजों का कब्जा हो गया। अंग्रेजी शासन काल में यहाँ चाय के कई बागान स्थापित किये गए। लगभग दो सदियों तकए बेरीनाग और चौकोड़ी में कई हेक्टेयर क्षेत्र में चाय के बागान फैले हुए थे। 1864 में ये बागान अंग्रेजी व्यापारी थॉमस मैकिंस और एडवियरस स्लेनेगर स्टेपॉर्ड ने अपने अधिकार मे ले लिया, जो ब्रिटेन में पंजीकृत एक कम्पनी थी। 1869 में ये कुमाऊँ-अवध प्लान्टेशन कम्पनी के स्वामित्व में आये और उसके बाद जेम्स जॉर्ज स्टीवेन्सन ने एक पंजीकृत बिक्री पत्र द्वारा इन्हें खरीद लिया। 1919 में यह भूमि ठाकुर देव सिंह बिष्ट और चंचल सिंह बिष्ट ने खरीदी थी। 1964-65 में इस क्षेत्र में कुल 9,667 नाली 195.4 हेक्टेयर क्षेत्र में चाय के बागान फैले हुए थे। 80.90 के दशकों में इन बागानों में चाय का उत्पादन समाप्त सा हो गया और फिर धीरे धीरे एक पूरे शहर ने यहाँ आकार ले लिया। बेरीनाग क्षेत्र राईआगर और उडियारी के माध्यम से आस-पास के अधिकतर हिस्सों से जुड़ा हुआ था। इसी कारण 2004 में डीडीहाट तहसील के 298 गाँवों को स्थानान्तरित कर बेरीनाग तहसील का गठन कर दिया गया। 2014 में नगर के केन्द्र से होकर जाने वाली सड़क राष्ट्रीय राजमार्ग घोषित हो गयीय राष्ट्रीय राजमार्ग 309ए नामक यह राजमार्ग बेरीनाग को अल्मोड़ा, बागेश्वर और गंगोलीहाट से जोड़ता है।

बेरीनाग में नाग मन्दिरों का इतिहास आर्यों से भी पहले का रहा है। काकेशियन आर्यों के इस क्षेत्र में आने से पहले यहाँ पर नाग वंश का शासनकाल था। नाग वंश के प्रतापी शासकों के नाम पर आज भी उनके मन्दिर हैं। धार्मिक पक्षकार इन्हें भगवान श्रीकृष्ण द्वारा पराजित किए गए कालीनाग का वंशज मानते हैं लेकिन इतिहासकार काकेशियन आर्यों के आगमन से पूर्व के नागवंश से जोड़ते हैं। जो भी हो यह क्षेत्र ऐसा है जहाँ पर मन्दिर ही नहीं बल्कि पहाड़ियों के नाम भी नागों के नाम से हैं। इतिहास देखने पर पता चलता है कि आर्यों के भारत में आने से पहले हिमालयी क्षेत्र में नागवंश का शासनकाल था कश्मीर से लेकर हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड और नेपाल तक नाग वंश के होने के प्रमाण हैं। कश्मीर में भी अनन्तनाग, बेरीनाग है तो उत्तराखण्ड के मनकोट क्षेत्र में कई नागों के नाम के स्थल और मन्दिर हैं। इतिहासकार बताते हैं कि नागवंश ने इस क्षेत्र में लगभग एक हजार वर्षों तक शासन किया। जिसमें कई प्रतापी राजा भी हुए। जब यहाँ पर काकेशियन आर्य पहुँचे तो यहाँ मौजूद नाग लोगों ने अपने प्रतापी राजा के नाम पर मन्दिर बनाए जो आज आस्था के प्रमुख केन्द्र बने हैं। पहाड़ में आज भी भूमिया देव को पूजा जाता है। तब नागवंशीय लोगों ने भी प्रतापी राजा को भी भूमि का देव मानते हुए पूजा था। नाग मन्दिर आज इस क्षेत्र में आस्था के प्रमुख केन्द्र हैं। जहाँ पर नागों के अलग-अलग मन्दिर हैं। प्रमुख मन्दिरों में बेरीनाग, धौली नाग, फेणी नाग, पिंगली नाग, काली नाग, सुन्दरी नाग है। यहाँ तक कि कुछ पहाड़ों का नाम तक नागों के नाम पर है। धौलीनाग बागेश्वर जिले के कमेड़ी देवी के पास स्थित है तो सुन्दरीनाग मुनस्यारी विकास खण्ड के तल्ला जोहार में है। इन नाग मन्दिरों और पहाड़ों का एक दूसरे से सम्बन्ध है। ये नाग मन्दिर आज इस क्षेत्र के लोगों के ईष्ट देवता हैं। इन मन्दिरों में रहने वाले देवताओं को बेहद शक्तिशाली माना जाता है। अलबत्ता इस क्षेत्र विशेष के अलावा अन्य स्थानों पर नाग के मन्दिर नहीं हैं। अतीत में छोटे-छोटे मंदिर अब भव्य रूप ले चुके हैं।

बेरीनाग की चाय इंग्लैंड, स्वीडन सहित कई यूरोपीय मुल्कों की पहली पसन्द रही है। आज भी यहाँ करीब सौ एकड़ की भूमि पर चाय बागान बचे हैं, लेकिन प्रभावशाली लोग आए दिन चाय बागानों को तबाह कर अपनी इमारतें खड़ी कर रहे हैं। इस गोरखधन्धो को रोकने की न तो कभी प्रशासन ने कोशिश की और न ही टी.बोर्ड बागानों की बचाने की सुध ली। चाय बागानों की दुर्दशा देखकर कहा जा सकता है कि उत्तराखण्ड को टी.स्टेट बनाने का दावा झूठा साबित हो रहा है। ऐसे में अगर कोई ठोस कदम नही उठाया गया तो, वो दिन दूर नहीं जब यहां के चाय बागानों पर पूरी तरह भूमाफियों का कब्जा हो जाएगा। एक दौर में दुनिया को नम्बर वन क्वालिटी की चाय मुहैया कराने वाले बेरीनाग के चाय बागान नष्ट हो रहे है। चाय बागानों की इस बदहाली ने जहां रोजगार को प्रभावित किया है, वहीं एक पहचान को भी इतिहास के पन्नों में समेट दिया है। खण्डर में तब्दील बेरीनाग की ऐतिहासिक चाय फैक्ट्री यहाँ के उजड़ते चाय उद्योग की दास्तां बयां कर रही है। 1864 में ब्रिटिश व्यवसायी हिली ने यहाँ चाय बागान और फैक्ट्री की शुरूआत की थी। आजादी के बाद भी यहाँ चाय का उत्पादन होता रहा था लेकिन भूमि विवाद हुक्मरानों की अपेक्षा के चलते आज ये उद्योग पूरी तरह खत्म हो गया है। यहाँ चाय का कारखाना खुला और यहाँ की चाय विदेशों में जाने लगी। बाद में मालदार परिवार भी इसका रखरखाव नहीं कर पाया तो धीरे-धीरे यहाँ के चाय बागान उजड़ने लगे अब तो यहाँ सिर्फ अतीत की यादें भर शेष रह गई हैं। उत्तराखण्ड में क्रमशः अदलती. बदलती सरकारों मे शीर्ष नेतृत्व के अभाव, तथा प्रदेश की समृ) व जनसरोकारों हेतु स्थापित सरकारों का विजन न होने से, प्रदेश के प्रबुद्ध जनमानस के सम्मुख घोर निराशा ही प्रकट हुई है। हैरत का विषय है, जिस उत्तराखण्ड से अंग्रेज हुक्मरानों ने चाय उद्योग की शुरुआत की थी, जिस क्षेत्र की चाय के दीवाने दुनियाभर में थे, पलायन आयोग की ओर से पेश की गई ताजा रिपोर्ट के मुताबिक गाँव लौटे प्रवासियों में से 65 फीसदी लोग ऐसे हैं जो अब उत्तराखण्ड में ही रहना चाहते हैं। यहीं पर रह कर अपना जीवन यापन करना चाहते हैं। वहीं 35 फीसदी लोग ऐसे हैं जो वापस बाहरी राज्यों में जाना चाहते हैं। पिछले 20 सालों में उत्तराखण्ड में पलायन की समस्या बेहद गम्भीर हो गई थी। सरकारों को ये समझ नहीं आ रहा था कि आखिर वो लोगों को दूसरे राज्यों मे जाने से कैसे रोकें। लेकिन कोरोना महामारी ने इस समस्या को 65 फीसदी तक लगभग खत्म कर दिया है। या यूं कहें कि कोरोना महामारी एक तरीके से प्रदेश सरकार के लिए पलायन के मुद्दे पर वरदान साबित करना है।

श्रद्धासुमन

उनकी उपस्थिति मात्र से महफिल ठहर सी जाती थी

डॉ.पंकज उप्रेती

25 फरवरी 2023 की प्रातः सीमा का फोन आया- 'ददा, पिता जी नहीं रहे। मैं सीमा बोल रही हूँ कपिल जी की बेटी।' सीमा (भुवन कपिल जी की सुपुत्री), मैं एकटक सोच में डूब गया।

81 वर्षीय भुवन कपिल सच्चे रंगकर्मी थे, पहाड़ की होली और रामलीला में उनका योगदान हमेशा याद किया जायेगा। हल्द्वानी शहर के मुखानी में रहने वाले कपिल परिवारों का शुरु से दबदबा रहा है। एक जमाने में जब मुखानी में दादाओं का नाम लेकर लोग डर जाते थे, खुली नहर में उफनते पानी को देख भयभीत हो जाते थे, भुवन कपिल का आवास सुरलहरियों में भीगा रहता था। मुखानी में होने वाली पर्वतीय रामलीला का बहुत नाम हुआ करता था। रात्रि में होने वाली रामलीला की तालीम से लेकर तैयारी तक इनके आवास पर होती। इसके अलावा मंगलवार को होने वाले सुन्दरकांड में युवाओं की टीम सक्रिय रहती। कपिल जी का आवास पूरी तरह अखाड़ा बना हुआ था, रात्रि को होली की महफिलों को जमजमा अब इतिहास बन चुका है। शायद ही कोई कलाकार रहा हो जो पहाड़ी ढब की होली को सुनने, सुनाने, देखने के लिये इनके आवास में न गया हो। पुराने जमाने के मकान में एक कमरा गोल आकार में था जिसमें लगातार होली की बैठक जमी रहती। बीच-बीच में चाय की चुस्की, पान-बीड़ी-सिगरेट. ....हर प्रकार के लोग जुटते और होली के भस्सी और उस्ताद भीमताल, नैनीताल, अल्मोड़ा से तक आया करते। इनमें कपिल जी का अपना स्टाइल था जो सबको सहग कर जाता। चाहे कोई किसी पद-कद का हो, गोल कमरे में सजने वाली महफिल में सब एक हो जाते। बाद में हिमालय संगीत शोध समिति का प्रशिक्षण केन्द्र इसी गोल कमरे में बना। उनका संरक्षण हम सभी के लिये रहा। होली की तीन-चार महीने तक चलने वाली खूबसूरत महफिलों में धुंआ-धुरमण्ड कोई मायने नहीं रखता था। श्रीमती ज्ञान कपिल की सेवा को भी नहीं भुलाया जा सकता है, जिन्होंने कपिल जी का पूरा साथ दिया और हर आने-जाने वाले मेहमान व कलाकारों होल्यारों को निभाया।

किन्हीं कारणों से मुखानी की रामलीला बन्द हो गई लेकिन होली की बैठकें वर्तमान तक जारी रही। उनके साथ ही बैठकों में इधर-उधर जाने का अवसर भी मिला। उनकी उपस्थिति मात्र से महफिल ठहर सी जाती थी। वह बैठक के बीच किसी भी प्रकार की आवाज बेकार को पसन्द नहीं करते और गाने से पहले कह देते 'या तो आप ही बोलो या मुझे गा लेने दो।' उनका स्वभावत सरल और कलाकार के रूप में मूडी था। वह खुले मन ने जीने वाले लोगों में से थे। कलाकार के अलावा अपनी संस्कृति संरक्षण के लिये वह समर्पित थे। स्वास्थ्य खराब होने के बावजूद कपिल जी की अन्तिम चाह संगीत और महफिल रही। वर्तमान कें हल्द्वानी शहर में बहुत बदलाव आ चुका है, समय के साथ इस परिवार ने भी अपना को व्यवस्थित किया। जिस स्थान पर गोल कमरा हुआ करता था, उनके सुपुत्र मोहित का चिकित्सालय है और आवास कुछ ही दूरी पर है। अपने नये आवास में भी उन्होंने होली की बैठकें करवाई और पुरानी महफिलों की यादें को ताजा किया। स्वास्थ्य कारणों से वह लड़खड़ाए लेकिन उनकी धुन व जिद होली बैठक थी जिसके लिये वह हम दोनों भाई (पंकज-धीरज) को खूब याद करते और कहते- 'मेरे हीरा-मोती हैं।' महफिल सजती और होली के टीके की बैठक अनिवार्य रूप से की जाती। इस बार भी वह होली के लिये रुके थे लेकन ईश्वर की लीला को वही जाने। वह अपने पीछे पत्नी श्रीमती ज्ञान कपिल, सुपुत्र डॉ.मोहित, विवाहित सुपुत्री सीमा सहित भरापूरा परिवार, मित्रों को छोड़ गये हैं। वह हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनकी प्रेरणा से वह अभियान चलता रहेगा जो शुरु हुआ था

निकाय चुनाव की तैयारियां

हल्द्वानी। नगर निगम चुनाव को लेकर तैयारियां अन्तिम चरण में हैं। निगम की ओर से ओबीसी जनगणना पूर्ण हो चुकी है। बताया गया है कि 14 वार्डों में ओबीसी की जनसंख्या का प्रतिशत पचास से अधिक है। इसमें सबसे ज्यादा जनसमंख्या इन्दिरानगर और सबसे कम भगवानपुर वार्ड में है।

नगर आयुक्त पंकज उपाध्याय ने बताया कि कि सर्वे की रिपोर्ट जिलाधिकारी को भेज दी गई है। रिपोर्ट के अनुसार नगर निगम क्षेत्र में 84169 आबादी ओबीसी की है।

माना जा रहा है कि मई में निकाय चुनाव हो सकते हैं। इसके लिये जिला निर्वाचन अधिकारी धीराज गर्ब्याल ने वार्ड वार मतदाता सूची तैयार करने के लिए अधिकारियों को नियुक्त कर दिया है। निकायों की मतदाता सूची वार्डवार बनाई जानी है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

चैत्र नवरात्र की हार्दिक शुभकामनाएं-

मनोहर सिंह मर्तोलिया

डायमण्ड विला

(जिला सहायक निबन्धक सहकारिता)

त्रिलोक नगर
मल्ली बमोरी
हल्द्वानी

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारात घर
नानासेम, मुनस्यारी

गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
मुनस्यारी

हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल एवं जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236
8958525979, 9411134775

सप्ताह के पर्व

चैत कृष्ण पक्ष

14 मार्च- मीन संक्रान्ति
17 मार्च- दसमाता पूजन
18 मार्च- एकादशी व्रत
19 मार्च- प्रदोष व्रत

Hotel Bala Paradise

Tiksain, Munsiari
Ph. 059612222237,
9412951678

Enjoy Beauty of Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग,माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

MARTOLIA FURNITURE
A unit of Martolia Enterprises
Pilikothi Haldwani
Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, कालाढूंगी रोड, हल्द्वानी (नैनीताल) से मुद्रित।
सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती
फोन/फैक्सः (05946) 264013, 9458961490, 9411770280, 9411301014, 9410713075,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com
पत्र व्यवहार के लिये पते-
जे0के0पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)